प्रामाण्यवाद :- किसी भी प्रमाण के द्वारा जो ज्ञान यथार्थ या सत्य माना जाता है उसका प्रमाण या आधार प्रामाण्य कहलाता है। जिस ज्ञान को यथार्थ या सत्य माना जाता है उसकी यथार्थता या सत्यता का प्रमाण प्रामाण्यवाद का विषय है।

भारतीय दर्शन में प्रामाण्य दो प्रकार का होता है :- (i) स्वतः प्रामाण्यवाद :- स्वतः प्रामाण्यवाद ज्ञान का वह सिद्धान्त है, जिसके अनुसार ज्ञानोत्पादक साधन व ज्ञानग्राहक साधन एक ही माने जाते हैं अर्थात् ज्ञान जिन कारणों से उत्पन्न होता है, उसका प्रामाण्य भी उन्हीं कारणों से जाना जाता है। इसके अनुसार प्रामाण्य के लिए किसी अन्य कारण की उपेक्षा नहीं पड़ती।

(ii) परतः प्रामाण्यवाद :- परतः प्रामाण्यवाद के अनुसार ज्ञानोत्पादक साधन तथा ज्ञानग्राहक साधन भिन्न होते हैं। ज्ञान का प्रामाण्य विषय-वस्तु के कारण-सामग्री के अतिरिक्त अन्य बाह्य बातों पर निर्भर करती है अर्थात् ज्ञान के प्रमाण के लिए अन्य कारणों की अपेक्षा रहती है।

Scanned with CamScanner

बौद्ध दर्शन — परतः प्रामाण्यवाद, स्वतः अप्रामाण्यवाद
न्याय दर्शन — परतः प्रामाण्यवाद
मीमांसा दर्शन — स्वतः प्रामाण्यवाद, परतः अप्रामाण्यवाद
सांख्य दर्शन — स्वतः प्रामाण्यवाद

बौद्ध-दर्शनः — बौद्ध दर्शन के अनुसार प्रामाण्य परतः (प्रवृत्ति-साफल्य) से उत्पन्न होता है जबकि ज्ञान स्वतः अप्रामाण्य होता है, वह असत्य उत्पन्न होता है।

न्याय-दर्शनः — न्याय परतः प्रामाण्यवादी है। न्याय के अनुसार प्रामाण्य और अप्रामाण्य दोनों परतः हैं, बाहर से आते हैं। ज्ञान की उत्पत्ति के बाद उसके प्रामाणिक या अप्रामाणिक होने का प्रश्न उठता है। यदि ज्ञान में यथार्थता, प्रवृत्ति-सम्वाद और सफलप्रवृत्ति-सामर्थ्य है तो ज्ञान प्रामाणिक है और यदि ज्ञान में अयथार्थता, विसम्वाद तथा प्रवृत्ति की असफलता है तो ज्ञान अप्रामाणिक है।

सांख्य-दर्शनः — सांख्य-दर्शन के अनुसार प्रामाण्य स्वतः होता है अर्थात् जिन कारणों से ज्ञान उत्पन्न होता है उन्हीं कारणों में ज्ञान की प्रामाणिकता और अप्रमाणिकता भी निहित रहती है। अतः ज्ञान का सत्य असत्य होना ज्ञान के ही कारणों के अधीन है, उसके लिए किसी अन्य कारण की अपेक्षा नहीं।

Scanned with CamScanner

PAGE NO.
DATE: / /200

मीमांसा-दर्शन :- मीमांसा स्वतः प्रामाण्यवादी है। मीमांसा के अनुसार ज्ञान का प्रामाण्य उस ज्ञान की उत्पादक सामग्री में ही विद्यमान रहता है, कहीं बाहर से नहीं आता और ज्ञान उत्पन्न होते ही उसके प्रामाण्य का भी ज्ञान हो जाता है।

"प्रामाण्यं स्वतः उत्पद्यते, प्रामाण्यं स्वतः ज्ञायते च"।

मीमांसक स्वतः प्रामाण्यवाद का प्रतिपादन करके ही वेदों को स्वतः प्रमाण सिद्ध करते हैं।

प्रभाकर :- प्रभाकर के अनुसार ज्ञान स्वप्रकाश है, 'स्वतः' का अर्थ है- 'ज्ञान-जनक सामग्री से'। अर्थात् दोषरहित कारणसामग्री जिस ज्ञान को उत्पन्न करती है वही सामग्री उस ज्ञान के प्रामाण्य को भी साथ ही उत्पन्न करती है। अतः उसका स्वतः प्रामाण्य स्वयंसिद्ध है।

कुमारिल :- कुमारिल के अनुसार ज्ञान कारणदोषरहित एवं बाधकज्ञानरहित सत्य वस्तु का ज्ञान होता है और जो सामग्री इस ज्ञान को उत्पन्न करती है वही सामग्री साथ ही इस ज्ञान के प्रामाण्य को भी उत्पन्न करती हैं।

Scanned with CamScanner